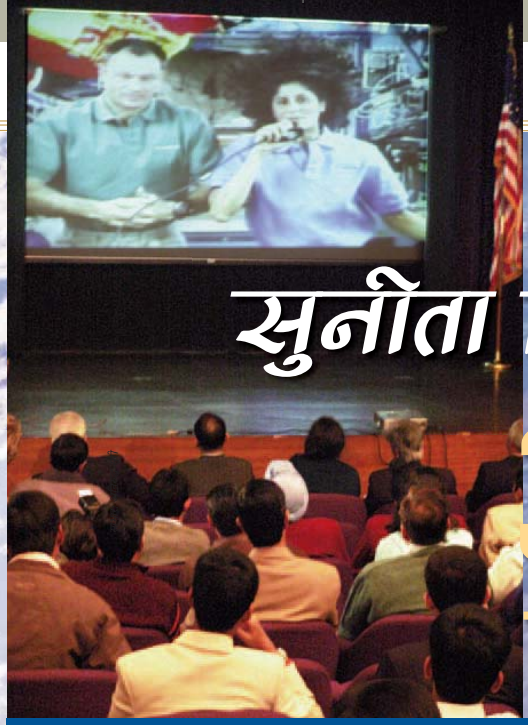

सभार : नासा

सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष की सैर

गिरिराज अग्रवाल

नई दिल्ली के अमेरिकन सेंटर में अंतरिक्ष से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान सवालों के जवाब देतीं सुनीता विलियम्स।

यहां से विश्व सीमाओं में बंटा नज़र नहीं आता। यहां से सिर्फ दिखता है हमारा सुंदर ग्रह, सुंदर ग्रामीण इलाके, सुंदर पहाड़ और सुंदर महासागर।'' भारतीय अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता एल. विलियम्स ने 10 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये सीधे नई दिल्ली स्थित अमेरिकन सेंटर में बैठे चुनिंदा दर्शकों से बातचीत के दौरान अंतरिक्ष के अपने अनुभव बांटे। उन्होंने कहा, ''अंतरिक्ष में तैरना बहुत भाता है,'' लेकिन ''यहां पर सबसे बड़ी बात मुझे यह लगती है कि हमारी पृथ्वी कितनी शानदार है।''

41 वर्षीय टेस्ट पायलट कमांडर सुनीता विलियम्स पृथ्वी से 400 किलोमीटर ऊपर चक्कर लगा रहे अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के अभियान 14 की सदस्य के रूप में अंतरिक्ष में गई हैं और फ़्लाइट इंजीनियर की भूमिका निभा रही हैं। वह दिसंबर में अंतरिक्ष स्टेशन में पहुंची और वहां छह महीने तक रहेंगीं। उन्हें नासा ने 1998 में चुना और अंतरिक्ष यात्री के उम्मीदवार के बतौर प्रशिक्षण देना शुरू किया। भारत में भी उनके इस अभियान के प्रति उत्साह है क्योंकि कल्पना चावला के बाद वह भारतीय विरासत से जुड़ी दूसरी महिला हैं जो अंतरिक्ष में गई हैं। उनके स्नायु रोग विशेषज्ञ पिता मूल रूप से गुजराती हैं लेकिन अब अमेरिका के मेसाच्यूसेट्स में रहते हैं। सुनीता विलियम्स अमेरिकी नागरिक हैं और अमेरिकी नौसेना अकादमी से ग्रेजुएट हैं लेकिन अपनी अंतरिक्ष यात्रा के दौरान वह अपनी भारतीय विरासत नहीं भूलीं। वह अपने साथ भगवान गणेश की मूर्ति, भगवदगीता की प्रति और कुछ समोसे ले गईं।

सुश्री विलियम्स ने कहा कि अंतरिक्ष की खोज महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें दुनिया को अलग नज़रिये से देखने का मौका और यह ''अंतर्दृष्टि मिलती है कि अपने ग्रह को कैसे आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाएं।'' उनके अनुसार अंतरिक्ष मिलजुलकर काम करने के लिए बढ़िया जगह है और यहां आकर ऐसा लगता है कि हम पृथ्वी पर क्यों विवादों में उलझे रहते हैं। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष स्टेशन में कई तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं– ''यह सिर्फ इंजीनियरी प्रोजेक्ट नहीं है। यह जीव विज्ञान का प्रोजेक्ट है, रसायन विज्ञान का प्रोजेक्ट है, इसमें बहुत सी चीज़ें एकसाथ हैं।'' अंतरिक्ष अभियानों से मानव को सीधे-सीधे होने वाले लाभों से जुड़े एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि शून्य गुरुत्व बल के चलते शारीरिक मांस और हड्डियों की ज़्यादा तेजी से क्षति होती है और प्रयोगों के जरिये इस बात की पड़ताल की जा रही है कि ऐसी स्थिति पर कैसे लगाम लगाई जाए जिससे कि मानव ज़्यादा समय तक अंतरिक्ष में रह सके। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष स्टेशन कई बार भारत के ऊपर से गुजरा और उन्हें हरे मैदान, लाल पहाड़...और बर्फ़ के सुंदर नजारे देखने को मिले।

अंतरिक्ष में जाने के बाद भी क्या अंतरिक्ष में फिर से जाने की इच्छा बरकरार रहती है? सुश्री विलियम्स का कहना था कि वह फिर से अंतरिक्ष की सैर करना चाहेंगीं लेकिन स्थायी तौर पर नहीं। उनके अनुसार अंतरिक्ष स्टेशन में बैठकर ''मैं सोचती हूं कि मुझे नीचे जाकर कितने काम करने हैं।''

अंतरिक्ष से 10 मिनट की सीधी बातचीत के दौरान शून्य गुरुत्व बल वाले अंतरिक्ष स्टेशन में सुनीता विलियिम्स के खुले बाल ऊपर की ओर लहरा रहे थे और वह लगातार मुस्करा रही थीं। उनसे अंतरिक्ष अध्ययन से जुड़े विभिन्न इलाकों के भारतीय छात्रों के अलावा पत्रकारों ने भी कई सवाल किए। राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड और उनकी पत्नी जीनी मल्फ़र्ड के अलावा भारत के पूर्व अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा भी इस मौके पर उपस्थित थे।

''अंतरिक्ष में तैरना बहुत भाता है,'' लेकिन ''यहां पर सबसे बड़ी बात मुझे यह लगती है कि हमारी पृथ्वी कितनी शानदार है।''